डॉ0 अंजनी कुमार सुमन

उसने कसर न छोड़ी, लाचार बनाने में
खोया रहा मैं खुद का, किरदार बनाने में

ये आप की दुआ ली, तो नूर सलामत है
दुनियाँ लगी हुई थी बीमार बनाने में

गर्दन की उम्र कितनी,अब देख कहाँ तक है
हर ओर सब भिड़े हैं, तलवार बनाने में

घर तोड़ती बहू को, ये ना हो पता शायद
कितना लहू भुना है, परिवार बनाने में

बचपन से हक हमेशा,भाई ने जताया था
अब दर्द हो रहा है, हकदार बनाने में

तनवीर साकित

ज़िन्दगी तू क्या रही है।
आज मिट्टी खा रही है।।

सब्ज़ पत्तों को बता दो।
रुत ख़िज़ां की आ रही है।।

हौसला देखो दिये का।
अब हवा घबरा रही है।।

जो न समझाया किसी ने।
ज़िन्दगी समझा रही है।।

लोग अच्छे रह गए कम ।
क्या क़यामत आ रही है ?

बुझ गए सारे दिये क्या ?
तीरगी क्यूं छा रही है।

क्यूं ज़माने से मुहब्बत।
ख़त्म होती जा रही है।।

ISSN:2583-8849